क्षमा

- **यतवीर सिंह**
वरिष्ठ शोध सहायक

मनुष्य गलतियों का पुतला है.स्वभावतः दैनिक जीवन में गलतियॉ करता है, क्रोधित होता है.महान बनने की इच्छा अथवा आधिपत्य की अभिलाषा एवं भावना उसे दंभी बना देती है. प्रकृति के सामान्य नियमों को ताक पर रखकर समाज में अपना परचम लहराता है, जैसे सर्वत्र तूँ ही तूँ है ऐसा विश्वास कर अपनी सत्ता का आभास दिलाता है.

यह विडम्बना ही है कि छोटी-छोटी बातों अथवा त्रुटियों पर मनुष्य क्रोध सातों आसमान पर चढ़ जाता है. मन अशान्त हो जाता है और वह कुछ न कुछ अहित अथवा बुरा करने पर उतर आता है. परन्तु अत्यधिक तिरस्कृत अथवा हानि होने पर भी अत्यन्त शान्त भाव से परिस्थिति को समझते हुए कलुषित, कड़वापन, अथवा बदले की भावना का त्याग कर आदर भाव से आत्मसात कर सरल व्यवहार करता है तो उसे 'क्षमा' कहते हैं. हृदय की उत्तम भावनाओं का प्रस्फुटन, प्रसारण एवं सत्यनिष्ठ होकर प्रत्याशा के विपरित, सदाचार अपना कर विरोधी को उच्च आसन प्रदान कर अपना जीवन आनन्दमय बनाना ही वास्तव में उत्तम क्षमा है.

क्षमा में शान्ति का वास तथा आनन्द की सरिता बहती है. क्या आपने कभी महसूस नही किया कि यदि किसी गलती पर जब हम नकारात्मक सोचते हैं तो क्रोध बढ़ता ही जाता है मन अशान्त हो जाता है. बुद्धि और विवेक सही काम नहीं करते, लेकिन इसके ठीक विपरीत जब हम गलती पर सकारात्मक रहकर सोचतें हैं तो स्वतः ही अन्दर से एक सरल भाव उत्पन्न होता है - छोडो जो हुआ ठीक है. ऐसा सोचने से मनुष्य को शान्ति महसूस होती है और वह उसके अच्छे बुरे पर विचार करता है अर्थात किसी घटना/स्थिति पर सकारात्मक सोच ही मानव के अन्दर क्षमा का भाव उत्पन्न करती है तथा उसमें स्नेह, करूणा, कल्याण एवं मंगलकामनाओं का सृजन होता है. मनुष्य महान बन जाता है. क्षमा का तेज विश्व की महाशक्तियों के सामूहिक तेज से भी बढ़कर हो जाता है. रामायण की इस उक्ति से प्रतीत होता है.

क्षमा दान क्षमा सत्यं क्षमा यज्ञश्चपुत्रिकाः ।
क्षमा यशः क्षमा धर्मः क्षमया विष्टित जगत ॥ रामायण (1-33-8-9)

अर्थात क्षमा ही दान है, क्षमा ही सत्य है, क्षमा ही कीर्ति है क्षमा ही धर्म है और यह रसभरी धरती भी तो क्षमा की धूरी पर ही टिकी है. अतः मन को शुद्ध व पवित्र करते हुए क्षमा के गुणों को आत्मसात करने की प्रेरणा का प्रबोधन होता है. कवि रहीम ने कहा है --

क्षमा बडन को चाहिए, छोटन को उत्पात् ।
का रहिम हरि घटो, जो भृगु ने मारी लात ॥

अर्थात बड़ो को चाहिए कि वह छोटो को क्षमा करें. यहां 'बड़न' युवा तथा छोट बालक का द्योतक है. शुक्रनीति (1:82) के अनुसार, सम्पूर्ण गुणों से युक्त होने पर भी यदि राजा में क्षमा गुण नहीं है तो उसकी शोभा नहीं बढ़ती

क्षमयातु बिना भूपो न भासखिल सद् गुणैः ।

आदि ग्रन्थ नारदीय पुराण (21-32) के अनुसार विश्व में क्षमा के समान कोई ख्याति नहीं है. 'नास्ति क्षमा समा ख्याति' स्कन्द पुराण (11-18) के अनुसार --

क्षमा युक्ताहि पुरूषालभन्ते श्रेय मुत्त्यम ।
यः समुत्पतितं कापं क्षमयै व निरस्यति ॥

अर्थात जो बहुत बड़े क्रोध को क्षमा से दूर कर देता है ऐसा क्षमाशील पुरूष अत्यन्त श्रेष्ठता को प्राप्त करता है.महाकवि वल्लुवर एवं जयशंकर प्रसाद जी ने क्षमा भाव का निम्न प्रकार वर्णन किया हैं --

"क्षमा से बढ़कर और किसी अन्य में, पाप को पुण्य में बदलने की शक्ति नहीं है".

साधु पुरूष हठयोग के द्वारा कठिन तपस्या करके बहुत कुछ पा लेते हैं परन्तु जिन्होंने कटु वचन सुनकर भी क्षमा कर दिया, वे ही वस्तुतः महान संत की श्रेणी में आते हैं. अतः क्षमा ही वह अमोघशस्त्र है जिससे भगवान शिव ने संसार के विष को कंठाग्र किया और देवताओं में देवाधिदेव रूप में पूजे जाते है. " राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के दर्शन में भी क्षमाभाव दिखता है. उन्होंने कहा है कि यदि तुम्हारे गाल पर कोई एक थप्पड़ रसीद करे तो तुम उसके सम्मुख अपना दूसरा गाल भी कर दो ". इसमें अहिंसा के साथ-साथ क्षमा भाव अन्तर्निहित है. अंग्रेजों के अत्याचार को सहन कर, सत्य, अहिंसा के पथ पर चलते हुए उन्हें क्षमा किया और अन्ततः अंग्रेजी हुकूमत के साथ अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाना पड़ा. कहा भी गया है --

दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढ़ाल ।
साबरमती के सन्त तूने कर दिया कमाल ॥

परन्तु संसार में ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो क्रोध, लोभ, मोह, माया के वश में होकर क्षमा भाव नहीं रखते हैं और हिंसा से भी नहीं हिचकिचाते. मेरा मानना है कि क्रोध व बदले की भावना सर्वदा हिंसा को ही जन्म देती हैं और इसमें उत्तरोत्तर वृद्धि करती हैं. जबकि क्षमा, आदिकाल से चली आ रही हिंसा को भी सदा के लिए समाप्त कर देती है. "आप क्या चुनेंगे? फैसला आपके हाथ."

* * * * *